



THE STUDY

DAILY ARTICLE

An Institute for IAS

HISTORY

BY

MANIKANT SINGH

मणिपुर की व्यापक अशांति

चर्चा में क्यों?

- ◆ मणिपुर में बहुसंख्यक मैती समुदाय का दर्जा दिए जाने का विरोध नागा और कुकी आदिवासियों द्वारा करने पर दोनों पक्षों के बीच झड़पें शुरू हो गयीं जिससे मणिपुर में अशांति का वातावरण व्याप्त है।

मणिपुर की जातीय संरचना क्या है?

- ◆ भौगोलिक रूप से मणिपुर राज्य एक फुटबॉल स्टेडियम की तरह है जिसके केंद्र में इम्फाल घाटी खेल के मैदान का प्रतिनिधित्व करती है और आस-पास की पहाड़ियाँ गैलरी हैं।
- ◆ चार राजमार्ग, जिनमें से दो राज्य के लिए जीवन रेखा हैं, घाटी के बाहर की दुनिया तक पहुँचने के बिंदु हैं। घाटी, जिसमें मणिपुर का लगभग 10% भूभाग शामिल है, में गैर-आदिवासी मैती समुदाय का प्रभुत्व है, जो राज्य की 64% से अधिक आबादी है और राज्य के 60 विधायकों में से 40 इसी समुदाय से हैं।
- ◆ 90% पहाड़ियों घिरे इस राज्य में 35% से अधिक मान्यता प्राप्त जनजातियों का निवास है, किन्तु इन जनजातियों से विधानसभा में केवल 20 विधायक ही हैं। अधिकांश विधायक मैती समुदाय के हिंदू हैं, इनके बाद मुस्लिम आते हैं, फिर 33 मान्यता प्राप्त जनजातियां हैं, जिन्हें मोटे तौर पर 'एनी नागा ट्राइब्स' और 'एनी कुकी ट्राइब्स' में वर्गीकृत किया गया है।
- ◆ यहाँ बड़े पैमाने पर ईसाई पाए जाते हैं।

क्या है मैती समुदाय का तर्क?

- ◆ मैती जनजाति संघ का प्रतिनिधित्व करने वाले आठ लोगों की याचिका पर सुनवाई करते हुए, मणिपुर उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को चार सप्ताह के भीतर केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्रालय को 10 साल पुरानी अनुसूचित जनजाति (ST) सूची में मैती समुदाय को शामिल करने हेतु सिफारिश प्रस्तुत करने का निर्देश दिया।
- ◆ नवीनतम सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण और नृवंशविज्ञान रिपोर्ट के साथ विशिष्ट सिफारिश मांगी गई थी। इस पत्र के बाद मणिपुर की अनुसूचित जनजाति मांग समिति (STDCCM) ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसने 2012 में मैती के लिए एसटी का दर्जा मांगना शुरू किया।
- ◆ मैती समुदाय के अनुसार, 1949 में भारत संघ में मैती समुदाय को राज्य के साथ विलय से पहले एक जनजाति के रूप में मान्यता दी गई थी।

- ◆ इसमें तर्क दिया गया कि समुदाय को "संरक्षित" करने और मैती समुदाय की "पारंपरिक भूमि, संस्कृति और भाषा के संरक्षण" के लिए एसटी का दर्जा प्राप्त करने की आवश्यकता है।
- ◆ STDCM के अनुसार मैती लोगों को बाहरी लोगों के खिलाफ संवैधानिक सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है, जिसमें कहा गया है कि समुदाय को पहाड़ियों से दूर रखा गया है, जबकि आदिवासी लोग "सिकुड़ती" इंफाल घाटी में जमीन खरीद सकते हैं।

आदिवासी समूह, मैती समुदाय को को ST दर्जा देने के खिलाफ क्यों हैं?

- ◆ आदिवासी समूहों का कहना है कि मैती लोग अकादमिक और अन्य पहलुओं में उनसे अधिक उन्नत होने के अलावा एक जनसांख्यिकीय और राजनीतिक लाभ प्राप्त करते हैं।
- ◆ मैती को ST का दर्जा मिलने से अन्य आदिवासी समूहों को नौकरी के अवसरों का नुकसान होगा और उन्हें पहाड़ियों में जमीन हासिल करने तथा आदिवासियों को बाहर धकेलने की अनुमति मिलेगी।
- ◆ मणिपुर के ऑल ट्राइबल स्टूडेंट्स यूनियन जैसे समूह के अनुसार, मैती लोगों की भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल है जिससे उन्हें SC, OBC या EWS स्थिति से जुड़े लाभों तक पहुंच है।
- ◆ "मणिपुर के पहाड़ी आदिवासी लोगों के लिए, ST दर्जे की मांग कुकी और नागाओं की उत्कट राजनीतिक मांगों को कम करने के साथ-साथ राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में घुसपैठ करने के लिए प्रमुख घाटी निवासियों की एक मौन रणनीति है।

अशांति का कारण

- ◆ मणिपुर में कुछ समूहों ने दावा किया कि कुछ आदिवासी समूह निहित स्वार्थों के साथ ड्रग्स के खिलाफ मुख्यमंत्री नोंगथोम्बम बीरेन सिंह के धर्मयुद्ध को विफल करने की कोशिश कर रहे हैं।
- ◆ नशीली दवाओं के खिलाफ अभियान अफीम के खेतों को नष्ट करने के साथ शुरू हुआ और यह सिद्धांत कि म्यांमार के "अवैध निवासी" मणिपुर के कुकी-ज़ोमी लोगों से जातीय रूप से संबंधित हैं तथा अफीम और भांग उगाने के लिए जंगलों और सरकारी जमीनों को साफ करना है।
- ◆ बड़े पैमाने पर आगजनी और हिंसा ने ST सूची में मैती को शामिल करने के कथित कदम के खिलाफ "आदिवासी एकजुटता रैली" का पालन किया।
- ◆ मणिपुर में सरकार ने एक विशिष्ट जनजातीय समूह को लक्षित करने के रूप में एक बेदखली अभियान चलाया। इस अभियान ने विरोध का नेतृत्व किया, लेकिन बड़े पैमाने पर नहीं, मणिपुर उच्च न्यायालय द्वारा राज्य को गैर-आदिवासी मैती समुदाय को अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने की 10 साल पुरानी सिफारिश को आगे बढ़ाने का निर्देश दिया।